http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

*कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका,* (2025) वर्ष 5, अंक 7, 1-6

Article ID:429

# अलसी: बीज उत्पादन सफलता की कहानी

**डी.के.पयासी[1], दीपा गर्ग[2], संज्ञा पयासी[3] और खुशबू चंद्रा[4]**

[1,2]जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय क्षेत्रीय कृषि अनुसन्धान केंद्र सागर-470001मप्र

[3]जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय जबलपुर482002,मप्र

[4]बिहार कृषि विश्वविद्यालय, बिहार

**परिचय, उपयोगिता एवं मानव स्वस्थ्य पर प्रभाव**

अलसी या फ्लेक्स या तीसी, जिसका वनस्पतिक नाम लाइनम युसिटेसिमम है।पाद्य वर्गीकरण अनुसार अलसी लाइनम जीनस और लीलिएसी परिवार का है।जिसका उत्पत्ति स्थान भारत माना जाता है।जिसकी खेती देष म ेंअनन्तकाल से की जाती रही है।जिसके प्रत्येक भाग का उपयोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से किया जा सकता है।अलसी रबी के मौसम में उगाई जाने वाली एक महत्वपूर्ण तिलहनी फसल है इसका प्रयोग खाद्य तेल की अपेक्षा औद्योगिक रूप से अधिक किया जाता है।रेशेदार फसलों में भी इसका महत्वपूर्ण स्थान है।इसके रेशे से मोटे कपड़े, लेनिन कपड़े, पैरासूट की डोरी और टाट बनाये जाते है।इसके बीज से तेल निकाला जाता है जो शीघ्र सूखने के गुण के कारण् ठसका प्रयोग वार्निश, रंग, साबुन, रोगन पेन्ट, प्रिटिंग स्याही आदि तैयार करने म ेंकिया जाता है।अलसी के विभिन्न व्यंजन जैस ेबिस्कुट, ब्रेड, केक, आइसक्रीम, पिन्नी या लड्डूविभिन्न प्रकार की चटनी आदि बनाये जाते है।इसकी खली में भी प्रचुर मात्रा में पोषक तत्व होते है जो कि गाय भैसों का ेबहुत प्रिय और पौष्टिक होती है।इसका प्रयोग सौन्दर्य प्रसाधनों जैसे उबटन, फेसपेक, बालो की जेल, दवाइयाँ तथा कागज के साथ ही अकुरण परीक्षण के प्रयोग में आनेवाला कागज भी बनाया जाता है।

विश्व स्वास्थ संगठन ने अलसी को ‘‘सुपरफूड’’ का दर्जा दिया है।वैज्ञानिकों का मानना है कि अलसी इस धरती का सबसे शक्तिशाली पौधा है। यह पिछले 6000 सालों से भोजन के रूप में उपयोग किऐ जाने वाला खाद्य प्रदार्थ है।अलसी के पौधे के तने से निकलेवालेरेशे की देश और विदेशों म ेंकाफी मांगहै।भारत में अलसी की खेती मुख्यतः तेल के लिए ही की जाती है इसक ेबीज में 33 से 45 प्रतिशत तेल और 20.3 प्रतिशत प्रोटीन तथा 4.8 प्रतिशत रेशा पाया जाता है।अलसी के तेलमें 50 से 55 प्रतिशत तक लिगोलिक अम्ल पाया जाता है।

**औषधीय गुण:**

अलसी के बीज मुख्यतः प्रोटीन, वसा, विटामीन एवं विभिन्न खनिजों से परिपूर्ण होता है।इसमें वसीय अम्ल-ओमेगा-3 भरपूर मात्रा में उपलब्ध है, जो मनुष्य के लिए एक आवश्यक वसीय अम्ल है जिससे हमारा शरीर संश्लेषित नहीं कर पाता है। यह अम्ल याददाशत को बढ़ाने में सहायक होने के साथ-साथ शारीरिक पुष्टता में इसका महत्वपूर्ण योगदान होता है। ओमेगा-3 मनुष्यों के रक्त में पाये जाने वाले कोलेस्टेरॉल की मात्रा को क्षरित करताहै।इसके अतिरिक्त ये हृदय आघात रोकने एवं गठिया रोग के निदान में भी उपयोगी है।इसमें पाये जाने वाला लिग्नेन नामक तत्व कैंसर अवरोधी होता है।इसकी 30 ग्राम मात्रा प्रतिदिन सेवन करने से प्रर्याप्त मात्रा में ओमेगा-3 व लिग्नेन तत्व शरीर को उपलब्ध हो जाते है।

**अलसी का पौष्टिक महत्वः-**

अलसी में मुख्य पौष्टिक तत्व ओमेगा-3 वसीय अम्ल या अल्फालिनोलेनिक अम्ल, लिगनेन, प्रोटीन एवं रेशेहोतेहै ओमेगा 3 हमारे शरीर की सारी कोशिकाओं, उनके केन्द्रक, माइटोकोन्ड्रिया आदि संरचनाओं के बाहरी खोल या झिल्लियों का महत्वपूर्ण हिस्सा होता है। यही इन झिल्लियों को वांछित तरलता, कोमलता और पारगम्यता प्रदान करता है।ओमेगा 3 का अभाव होने पर जब हमारे शरीर में की कमी हो जाती है।तो ये भित्तियां मुलायम व लचीले ओमेगा 3 के स्थान पर कठोर व कुरूप ओमेगा 6 वसा या ट्रांसवसा के बनती है, जिसस ेओमेगा 3 और ओमेगा 6 का संतुलन बिगड़ जाता है, प्रदाहकारी प्रोस्टग्लिडिन्स बनने लगते है, हमारी कोशिका एंइनफ्लेम होकर सुलगने लगती है

और यही से उच्चरक्तचाप, शुगर, मोटापा, डिप्रेशन, आर्थाइरिस और कर्क आदि रोगो की शुरूआत हो जाती है। अलसी के बीजों की विलक्षणता के तीन पहलू है और ये तीनो हमें इस खाद्य के स्वास्थ्य लाभ में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते है जो निम्न है-

1. ओमेगा 3 वसीय अम्ल
2. पादप एस्ट्रोजन या एन्टीआक्सीडेन्ट
3. रेशा (लिगनिन)

अलसी के बीजों मे रेशा, विटामिन्स और प्रोटीन्स के साथ खनिज लवण प्रचुर मात्रा में मौजूद होते है।प्रोटीन्स शरीर के समुचित विकास में सहायक होते है।अलसी में रेशा की मात्रा उच्च होने के कारण कोलोन का स्वास्थ बरकरार रहता है और आंतड़ियों की गतिविधि में सुधार होता है।अलसी म ेंमौजूद एन्टीआक्सीडेन्टस रक्त को शुद्ध करते है, त्वचा तथा बालो ंको चमक देते है अलसी के तेल को खाद्य तेल के रूप में इस्तेमाल करने में लोगो की रूचि बढ़ी रही है क्योंकि इसके तेल में ओमेगा-3 वसीय अम्ल (लिनोलिनिक अम्ल) बड़े पैमान पर पाया जाता है।जो कि चिकित्सको और वैज्ञानिकों द्वारा अनुसंधान और प्रयोगकर स्वास्थ के लिए अत्यन्त लाभकारी बताया गया है।अलसी को पादप आधारित ओमेगा 3 वसीय अम्ल जिसे अल्फालिनोलेनिक एसिड कहते है की उपलब्ध मात्रा के कारण एवं तिल की तुलना में 7 गुना ज्यादा लिगनिन पाये जाने के कारण भी प्रथम स्थान प्राप्तहै। यह लिगनिन जीवाणुरोधी, वीषाणुरोधी, फफूदरोधी और कैन्सररोधी है।

**फायदेः-**

1. उर्जा, स्फूर्ति व जीवटता प्रदान करती है।तनाव के क्षणोंमें शांत व स्थिरबनाये रखने मे ंसहायक है।
2. यह कैन्सररोधी हार्मोन की सक्रियता बढ़ाता है।
3. रक्तमें शर्करा तथा कोलेस्ट्राल की मात्रा को कम करता
4. जोड़ो का कड़ापन कम करता है।
5. प्राकृतिक रेचक गुण होने से पेट साफ रखता है।
6. हृदय सम्बन्धी रोगो के खतरे को कम करता है एवं खून को पतला करता है।
7. उच्च रक्तचाप को नियंत्रित करता है।
8. त्वचा को स्वस्थ रखता है एवं सूखापन दूरकर एग्जिमा आदि से बचाता है।
9. बालो व नाखून की वृद्धिकारउन्हे स्वस्थ व चमकदार बनाता है।
10. इसका नियमित सेवन स्त्रोनिवृति सम्बन्धी मांसपेशियों में राहत प्रदान करता है।

**अधिक लाभ एवं उत्पादकता हेतु अलसी उत्पादन तकनीकी**

भारतवर्ष में रबी मौसम में उगाई जाने वाली तिलहनी फसलों राई एवं सरसों के बाद अलसी का प्रमुख स्थान है। क्षेत्रफल एवंउत्पादन की दृष्टि से भारत का स्थान विश्व मे ंक्रमषः तृतीय एवं चतुर्थ स्थान है।भारत में अलसी खेती लगभग 2.11 लाख हे. क्षेत्र में की जाती है तथा उत्पादन 1.46 लाख टन के साथ उत्पादकता 693 किग्रा/हे. है जो कि विश्व म ेंकुल रकबे एवं उत्पादन का 10.81 एवं 5.31 प्रतिशत क्रमशः है।दश के विभिन्न भागों में इसे अधिकांशातया सीमान्त, सम-सीमान्त, कम उर्वर भूमियों, बारानी परिस्थितियों मेंे एकल, मिलवाँ, पैरा, उतेरा आदि के रूप में लेते हैं।देष में अलसी के कुल क्षेत्रफल का लगभग 97 प्रतिषतभाग मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तरप्रदश , महाराष्ट्र, बिहार, उडीसा, झारखण्ड, कर्नाटक एवं असम मे ंआता है। क्षेत्रफल एवंउत्पादन की दृष्टि से मध्यप्रदश का देश मे ंप्रथम स्थान है। मध्यप्रदेष में इसकी खेती 1.00 लाख हे. क्षेत्र में की जाती है; जिससे 74 हजार टन उत्पादन है जबकि उत्पादकता मात्र 785 किग्रा/हेक्टेयर है । मध्य प्रदेष के प्रमुख अलसी उत्पादक जिले बालाघाट, रीवा, सागर, दमोह, सिवनी, सीधी, सतना, शहडोल, छतरपुर, रायसेन, पन्ना, मण्डला, जबलपुर, होशांगाबाद, सीहोर एव ंमन्दसौर हैं।अलसी की एकल फसल से पैदावार अधिक मिलती है।

देष में पुरातनकाल से अलसी की खेती की जा रही है जो कि मुख्य रूप से असिंचित (63ः) उतेरा (25ः) जबकि िसंचित अवस्था में केवल (17ः) में की जाती है।वर्तमान में प्रदेष में सिंचाई का रकबा बढ़ने एवं अखिल भारतीय समन्वित अलसी अनुसंधान परियोजना एवं किसानों के सार्थक प्रयासों एवं उन्नतत कनीकियों के साथ बेहतर सस्य प्रबंधन एवं यंत्रीकरण के प्रयोग से इस फसल की लागत में कमी एवं उत्पादन में बढ़ोतरी के परिणाम स्वरूप षुद्ध आय म ेंप्रगति देखी गई है।जिसमें कतार में बुबाई के साथ बेहतर खरपतवार, पोशण, सिंचाई के साथ-साथ अलसी की फसल में विगत कुछ सालो से यंत्रीकरण का प्रयोग किया जा रहा है जिससे टैक्टर के साथ उर्वरक वितरण इकाई, सीडड्रिल के माध्यम से उर्वरक एवं बीज की बुबाई के साथ-साथ खरपतवारनाषी एवं कीटनाशाी के छिड़काव हेतु टैक्टर चलित यंत्रो का प्रयोग एवं कम्बाइन हारवेस्टर के माध्यम से कटाई एवं गहाई का कार्य किया जा रहा है जिससे समय, श्रम एवं लागत के कमी के साथ-साथ अलसी की फसल किसानो के बीच अन्य रबी फसलो (गेहूं-चना) की तरह मित्रवत फसल के रूप में पुनः स्थापित करने में सफलता मिलने के साथ-साथ किसानो की षुद्ध लागत से वृद्धि हुई है।परिणाम स्वरूप उत्पादकता में तेजी से सुधार हो रहा है और आने वाले समय में 1000 के आस-पासहोने की उम्मीद की जासकती है।

**भूमि का चुनावः**-यह फसल विभिन्न प्रकार की भूमियों में ली जा सकती है किन्तु हल्की-बलुई

मिट्टी इसके लिए उपयुक्त नहीं होती। दोमट मिट्टी अच्छी उर्वर एवं जल युक्त भूमि सर्वोत्तम होती है। आधुनिक संकल्पना के अनुसार उचित जल एव पोशण प्रबंधन करने पर किसी भी प्रकार की मिट्टी पर अलसी की खेती बेहतर उत्पादन के साथ सफलता पूर्वक की जा सकती है।

**भूमि की तैयारी:**-एक गहरी जुताई के बाद 2-3 हल्की जुताईयाँ आवष्यक हैं, ताकि मिट्टी भुरभुरी, समतल, ढेले व नींदा रहित हो जाए क्योंकि दाना छोटा होने से खेत का ढेले रहित व प्रचुरनमी युक्त होना अतिआवष्यक है।

**बोने का समय:**-बारानी खेती हेतु अलसी की बुआई अक्टूबर मध्य में एव सिंचित अवस्था में नवम्बर मध्य माह में की जाती है। समय पर बोआई करने से विभिन्नरोगों (जैसे उखठा, अंगमारी, रतुआ व चूर्णीफफूंद रोग) व कीटों (खासकरकली की मक्खी) से छुटकारा मिलता है।

## उन्नत प्रजातियॉ

| | उन्नत प्रजातियाँ | विमोचन वर्ष | उपज प्रतिहे. | तेलांष % | मुख्य विषेशताएं |
|---|---|---|---|---|---|
| 1. | जवाहर अलसी 67 | 2010 | 1253 | 38 | सफेदफूल, असिंचित खेती हेतु अनुसंषित उकठा, भभूतिया, अंगमारी एवं रतुआ रोगों एवं कलिका मक्खी के प्रति मध्यम प्रतिरोधी |
| 2. | जवाहर अलसी 73 | 2011 | 1090 | 38 | नीलोफूल, असिंचित खेती हेतु अनुसंषित भभूतिया, अंगमारी एवं कलिका मक्खी के प्रति मध्यम रोधिता |
| 3. | जवाहर अलसी 41 | 2013 | 1600 | 40 | सफेदफूल, सिंचित खेती हेतु अनुसंषित |
| 4. | जवाहर अलसी 79 | 2016 | 1726 | 38 | नीलोफूल, सिंचित खेती हेतु अनुसंषित उकठा, भभूतिया, एवं कलिका मक्खी के प्रति मध्यम रोधिता |
| 5. | जवाहर अलसी 66 | 2018 | 1200 | 43 | नीलोफूल, असिंचित खेती हेतु अनुसंषित उकठा, भभूतिया, अंगमारी एवं रतुआ रोगों तथा कलिका मक्खी कीट के प्रति मध्यम अवरोधी |
| 6. | जवाहर अलसी 95 | 2018 | 1085 | 40 | सफेद फूल, असिंचित खेती हेतु अनुसंषित रतुआ के प्रति अवरोधी उकठा, भभूतिया, अंगमारी के प्रति मध्यम अवरोधी एवं कलिक ामक्खी कीट के प्रतिमध्यम अवरोधी |
| 7. | आर.एल.सी. 148 | 2018 | 1300 | 39 | नीले फूल, असिंचित क्षेत्र ों हेतु उपयुक्त उखठा, चूर्णी फफूंद व अंगमारी के प्रति मध्यम रोधी है |
| 8. | जवाहर अलसी 93 | 2019 | 1050 | 39 | सफेदफूल, असिंचित खेती हेत ुअनुसंषित उकठा, भभूतिया, अंगमारी के प्रति मध्यम अवरोधी एवं रतुआ के प्रति अवरोधी तथा कलिका मक्खी कीट के प्रति मध्यम अवरोधी किस्म |
| 9 | जवाहर अलसी 165 | 2020 | 1352 | 35 | नीले फूल, सिंचित क्षेत्रों हेतु उपयुक्त उखठा, चूर्णी फफूंद व अंगमारी के प्रति मध्यम रोधी है |
| 10 | जवाहर अलसी 122 | 2023 | 950 | 41 | नीलोफूल, असिंचित क्षेत्रों हेतु उपयुक्त उखठा, चूर्णी फफूंद व अंगमारी के प्रति मध्यम रोधी है |

**बीजउपचार:-** बोनीपूर्व 10 ग्रा. ट्राईकोडर्मा विरडी/कि. बीज के मान से बीज का उपचार करें।साथ ही साथ 10 ग्रा. एजोटोवेक्टर एवं पी.एस.बी. प्रति कि. बीज की दर से टीकाकरण किया जाए तो उपज में 10 प्रतिषत तक की वृद्धि संभव है।रासायनिक बीजोपचार हेतु 2 ग्राम कार्वेन्डाजिम/कि. बीज के मान से बीज का उपचार करना लाभदयक होता है।

**बोने की विधि एवं बीज दरः-** बरानी व सिंचित हेतु क्रमषः 30 एवं 25 बीज/हे. का प्रयोगकरें।नम, भुरभुरे खेत में 2-3 से.मी. गहराई पर बोनी सीडड्रिल के माध्यम से की जाती है।कतार से कतार की दूरी 25 से 30 से.मी. पर्याप्त होती है।पौधा से पौधा की दूरी 5 से.मी. पौधे के समुचित विकास के लिए अनुकूल होती है । सूखे मे ंबुवाई करके खुला पानी या स्प्रिंकलर (8 घन्टे) पानी देने से बेहतर अंकुरण देखा गया है।

**जैवउर्वरकः-**बीज में तेलांष की मात्रा बढ़ाने के उद्देष्य से यह आवष्यक है कि जैव उर्वरक के रूप में सल्फर घोलक जीवाणु एक लीटर प्रति हेक्टर की दर से वानस्पितक अवस्था मे ंप्रयोग करना उचित है।

**पोषणप्रबंधन:-**सिंचित फसल हेतु 5 टन अच्छी पकी हुई गोबर की खाद तथा 80ः40ः20ः20ः नत्रजन: स्फुर: पोटाष: सल्फर/हे. दिया जाए साथ ही 10 कि. जस्ता/हे. लाभकारी होता है।सिंचित अवस्था मंे स्फुर, पोटाश, गंधक व जस्ता की पूरी-पूरी मात्रा ॅबोते समय आधार रूप में दें। नत्रजन की मात्रा को दोभागों मेंविभक्त कर पहली एवं दूसरी सिंचाई पर दें। असिंचित अलसी मंे 5 टन जीवांष्म खाद के साथ 40 कि. नत्रजन, 20 कि. स्फुर, व 20 कि. पोटाष, 10 कि. गंधक व 5 कि. जस्ता/हे. दें। 40-50 दिन के आस-पास की फसलको छरूच्रूज्ञ रूरू 19रू19रू19 के साथ फफूंदनाषक का स्प्रे बेहतर परिणाम देता है।

**सिंचाई:-**सिंचित अवस्था में फसल लेने पर दो सिंचाई की आवष्यकता होती है।प्रथम सिंचाई 35-40 एवं दूसरी 65-70 दिन मे ंदेना आवष्यक होता है।तीन पानी की उपलब्धता की स्थिति में पहला 25 दिन, दूसरा 50 दिन, तीसरा 75 दिन पर देना उचित होगा।

**खरपतवार नियंत्रणः-**प्रभावी नींदा नियंत्रण हेतु गेहू फसल में प्रयुक्त होने वाला खरपतवारनाषी मेटसल्फुरानमिथाइल 4 ग्रा. ए.आई. के साथ क्लोडिनाफाप 60 ग्रा./1.00 हे. रकबे में 18 से 20 दिन की फसल में प्रयोग करें। यदि केवल चौड़ी पत्ते के नींदा ह ैतो 0.5 कि. 2,4-डी/हे. का बुआई के 25-30 दिन पर छिड़काव करना लाभप्रद होता है। फ्लेटफैन या फ्लडजैट नॉजल का ही उपयोग किया जावे । साइकिल, कुल्फा, डोरा या ट्रैक्टर में कल्टीवेटर के माध्यम से प्रभावी नियंत्रण किया जा सकता है।

**अलसी हेत ुअन्तर्वर्ती फसल पद्धतिः-**वर्षा आधारित अलसी मंे 4 कतार अलसी व 2 कतार कुसुम/करडी की लगाने से उपज एवं आर्थिक शुद्व लाभ अधिकतम मिलता है। 5 कतार अलसी व एक कतार सरसों तथा 4 कतार अलसी $ 2 कतार चना एवं 4 कतार अलसी $ 2 कतार गेहूॅ के क्रम में अर्न्तवर्तीय फसल पद्वति अपना सकते है।अलसी आधारित अन्तर्वर्ती फसल पद्वति में (अलसी 4 कतार $ कुसुम 2 कतार) मुख्य फसल अलसी हेतु 40ः20ः20ः नत्रजनःस्फुरःपोटाष/हे. तथा द्वितीयक/गौड़ फसल (करडी) हेतु अनुशंसित तत्वों की आधी मात्रा (20ः10ः10ः नत्रजन: स्फुर: पोटाष/हे.) पर्याप्त व आर्थिकदृष्टि से उपयुक्त होती है।

**फसलकटाई:-**फसल की कटाई जातियों के अनुरूप करंे।फसल की कटाई जब कैप्सूल भूरे रंग के हो जाये एवं उनमें हाथ फेरने से खनखनाने की आवाज आने लगे तब करना उचित है।फसल कटाई हेतु रीपर कम बाइन्डर कम्बाइन हारवेस्ट्र या हाथ से काट के सूखाने के बाद थ्रैसर या ट्रैक्टर टायर को घुमाकर गहाई करे एव ंपंखे की सहायता से उड़ाकर साफ कर ले।बीज को सुरक्षितकर 8 प्रतिषत बीज में नमी होने पर भंडारित करें।

**सीड हब तिलहन-सफलता की कहानी**

**अधिकतम उत्पादकता एवं आय हेतु कम लागत में बड़े पैमाने में अलसी उत्पादन**

भारत सरकार की राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा मिशन के अंतर्गत जवाहरलाल नेहरू कृषि विष्वविद्यालय के क्षेत्रीय कृषि अनुसंधान केंद्र सागर में संचालित सीडहब तिलहन (अलसी परियोजना) के अंतर्गत किसान श्री दिनेश माहेष्वरी निवासी ग्राम गोदराई पोस्ट बनखेड़ी जिला होशंगाबाद में 150 एकड़ से अधिक रकबे मे ंअलसी बीज उत्पादन कार्यक्रम वर्ष 2017-18 एवं 2018-19 में अलसी वैज्ञानिक एवं परियोजना प्रभारी की देखरेख एवं मार्गदर्शन में मध्यप्रदेश राज्य बीजप्रमाणीकरण संस्था होशंगाबाद के माध्यम से बीज उत्पादन कार्यक्रम लिया गया। श्री दिनेश माहेश्वरी जी ने अलसी फसल के बीज उत्पादन कार्यक्रम मे ंसिंचाई हेतु कम पानी की उपलब्धता की स्थिति में अभिनव प्रयोग से यह सिद्ध किया कि यदि इस फसल को अन्य रबी फसलों के बराबर महत्त्व दिया जाये तो किसी भी फसल की तुलना में बेहतर आय के साथ अधिक शुद्ध लाभ दे सकने में सक्षम है। इस पूरे रकबे में कम लागत में अलसी उत्पादन की उन्नत तकनीकियों जैसे खरपतवार, पोशण, सिंचाई, प्रबंधन के साथ-साथ बुबाई से लेकर फसल की कटाई गहाई का कार्य यंत्रीकरण के माध्यम से किया गया। इस हेतु कम बीज दर

(18-20 किलोग्रामप्रति हे.), बीज उपचार हेतु इमिडाक्लोप्रिड 48 एफएस, बुबाई के समय क्।च् 100 किलोग्राम $ 12 किलो ग्राम बेन्टोनाइट सल्फर/हेक्टेयर सूख मे ंबुबाई करने के बाद सिंचाई की गई। खरपतवारनाशी के रूप मे ंमेटसल्फुरानमिथाइल 4 ग्रा. ए.आई. के साथ क्लोडिनाफाप 60 ग्रा./1.00 हेक्टेयर रकबे में 500 लीटरपानी के साथ 18-25 दिन की फसल मे ंट्रैक्टर स्प्रेयर के माध्यम से दियागया। सिंचाई 30-35 दिन म ेंकरने के बाद तुरंत यूरिया 25 किलो प्रति एकड़ की दर से एवं 50 से 55 दिन में अगली सिंचाई के बाद घुलनशील उर्वरक छच्ज्ञरू19ः19ः19, एमिनोस के साथ कीट प्रबंधन हेतु इमिडाक्लोप्रिड 17.6 एस.एल. का स्प्रे किया गया । बीज फसल की कटाई एवं गहाई कम्बाइन हार्वेस्टर के माध्यम से की गयी । उप संचालक कृषि के निर्देशानुसार बीज फसल की फसल कटाई की गयी और प्रजाति जवाहर अलसी 66 एवं जवाहर अलसी 73 की उपज क्रमशः 19.50, 18.80 क्वि. प्रति हेक्टयर रिकार्ड की गयी ।

## आर्थिक आय-व्यय विष्लेशण

| वर्श | प्रजाति (हे.) | रकबा (कु.) | उत्पादन मूल्य/हे. | कुल लागत | कुलआय/हे. | षुद्ध आय/हे. | लागतमूल्य बढ़ोतरी अनुपात |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 2018.19 | JLS 66 | 40.00 | 19.50 | 21500 | 111600 | 90100 | 4.19 |
| | JLS 73 | 25.00 | 18.80 | 21500 | 83250 | 61750 | 2.87 |
| 2020.21 | Pratap 2 | 32.00 | 18.25 | 22500 | 146000 | 123500 | 5.49 |
| 2022.23 | Pratap 2 | 34.00 | 17.50 | 24000 | 87500 | 63500 | 2.64 |

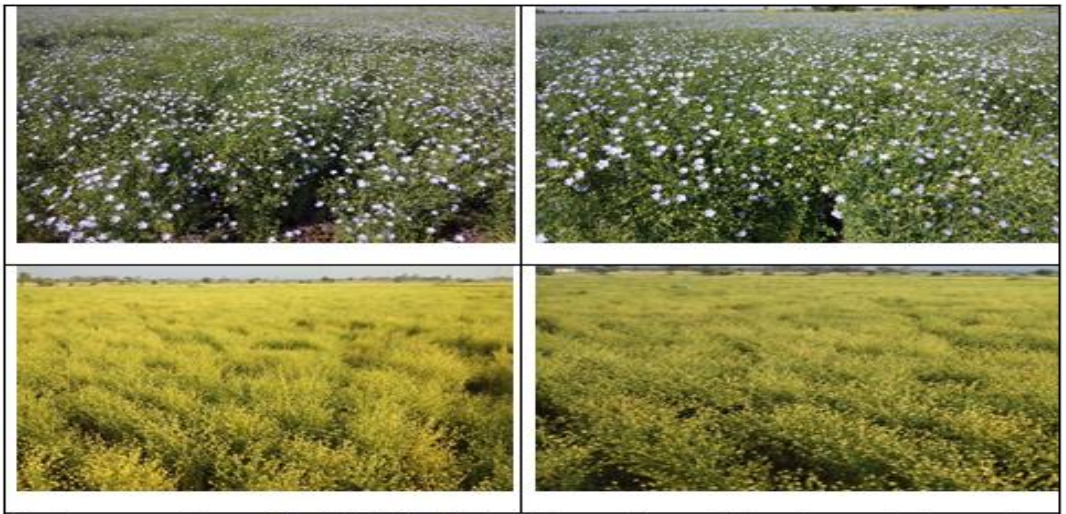

Performance of Linseed Variety JLS 73 at Vegetative and Reproductive stage under large scale seed production program (36 ha) with best possible agronomic management and mechanization

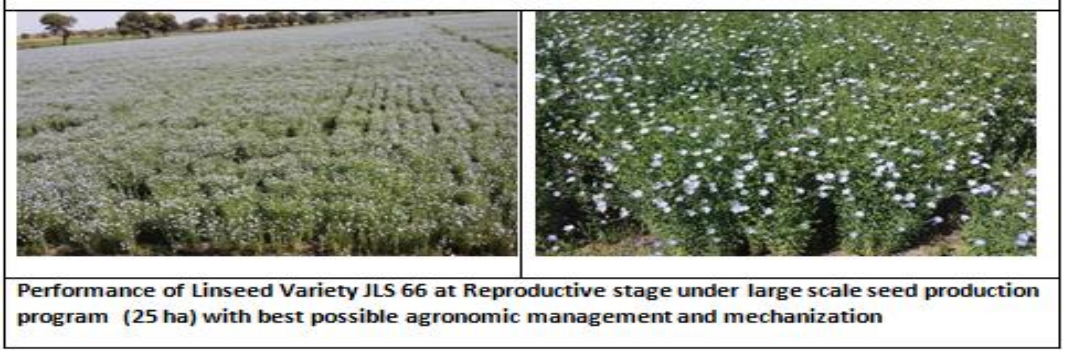

Performance of Linseed Variety JLS 66 at Reproductive stage under large scale seed production program (25 ha) with best possible agronomic management and mechanization

Visit of Hon'ble member of Board of Management, Director Farms, JNKVV, Jabalpur, Principal Scientist &Incharge and Nodal Officer Seed hub Oilseeds Linseed, RARS, Sagar

20 नईदुनिया
जयपुर, रविवार 17 मार्च 2019
गाडरवारा
www.naidunia.com

न्यूज गैलरी

**छटी शरीफ पर हुई फातिर**

**गाडरवारा।** स्थानीय हजरत पैरेय्य बाबा दरगाह शरीफ पर गुरुवार को हाजा हिन्दतवली अजमेर शरीफ के उर्स मुबारक के मौके पर छटी शरीफ की फातिहा हुई तबर्रुक तकसीम के साथ लंगर का आयोजन किया गया। दरगाह पर उपस्थित अकीदतमंदो ने एकता भाईचारे के लिए दुआएं मांगी। नदी के उस पार स्थित करबला शरीफ दरबार में भी लंगर का आयोजन किया गया। बैजासेन वार्ड स्थित ख्वाजा गरीब नवाज चौकी पर भी कुल शरीफ की फातिहा हुई। कुछ्लानि दौर से निरन्तर रहने वाले कई लोग जियारत करने खादर संखल लेकर अजमेर शरीफ रवानाहुए।

**हेमराज पांडे का निधन**

**तेंदूखेड़ा।** नगर के प्रतिष्ठित नागरिक एवं शिक्षा विभाग के सेवानिवृत्त कर्मचारी हेमराज पांडेका बीते दिनिस निधनहो गया। अंतिम यात्रा में सभी वर्गों के लोगो ने शामिल होकर श्रद्धांजलि दी।

# कृषि में नवाचार: अलसी ने बदली किसानों की तकदीर

गाडरवारा। नईदुनिया न्यूज

**भू-जल स्तर कम होने से अन्य फसलों में होने लगी परेशानी**

पारंपरिक तरीके से हटकर खेती करके किसान न सिर्फ पर्यावरण की रक्षा कर रहे हैं बल्कि अपनी तकदीर भी बदल रहे हैं। नरसिंहपुर और होशंगाबाद जिले के कई किसानों ने अलसी की खेती करके न सिर्फ सफलता के नए कीर्तिमान स्थापित किए हैं बल्कि वे दूसरे किसानों के लिए नजीर साबित हो रहे हैं। जिले के कई किसानों समेत गाडरवारा शेलगांव निवासी योगेश कौरव व कनेडी के दिनेश महोरची ने पारंपरिक तरीके से हटकर अलसी की खेती के अभिनव प्रयोग किए जिसमें उन्हें जेहतर परिणाम मिले। अखिल भारतीय कृषि अनुसंधान केन्द्र के वैज्ञानिक डॉ. डी के पाण्डे के मार्गदर्शन में इन किसानों ने अलसी की खेती प्रारंभ की। डॉ. पाण्डे ने बताया कि अलसी की फसल के कई फायदे हैं। इस फसल के लिए कम पानी की जरूरत होती है, इसके अलावा इसमें कीट और अन्य बीमारियों का खतरा भी नहीं होता है। अलसी में ओमेगा-3 पाया जाता है जिसकी आज बाजार में बहुत ज्यादा मांग है। साथही अलसी के पौधे के रेशे से लिनिन कपड़ा भी बनाया जाता है।

योगेश कौरव बताते हैं कि वर्तमान समय में आवश्यकता और उपलब्ध संसाधनों के आधार पर कृषि करना किसानों के लिए लाभदायक है। कृषि में नवाचार किसानों के लिए फायदेमंद साबित हो रहा है। अलसी की खेती भी उनमें से एक अभिनव प्रयोग है, जिससे किसानोंको बेहतर लाभ मिल रहा है।

गाडरवारा। फसल का अवलोकन करते वैज्ञानिक और कृषक।

**80 के दशक में थी 5 लाख हेक्टेयर की फसल**

■ भारत सरकार की अखिल भारतीय समन्वित अलसी अनुसंधान परियोजना एवं सी उदहरण परियोजना के अंतर्गत अलसी की नई प्रजातियों का विकास किया जाता, किसानों को गुणवत्ता का बीज उपलब्ध कराना तथा उन्नत तकनीकों को किसानों तक पहुंचाना इस परियोजना का प्रमुख उद्देश्य है। 80 के दशक में प्रदेश में लगभग 4 से 5 लाख हेक्टेयर पर में अलसी की फसल होती थी जो अब घटकर कुछ हजार एकड़ तक सिमट गई है।

**हर तरह से फायदेमंद**

वैज्ञानिक बताते है कि अलसी एक ऐसी फसल है जिसमें पानी कम लगता है, उकठा दान और गन्ने की खेती में अत्यधिक भूत ताहि होत है जाहिर है कि कटे उपलब्ध जल के अनुसार लंबे समय खेती करना है तो अलसी की एक बेहतर विकल्प है। इसके अलावा स्वास्थ्य के लिए अलसी बहुत ज्यादा फायदेमंद है।

**पर्यावरण और किसानों के लिए बेहतर विकल्प**

किसन दिनेश महोरची ने बताया कि हमारे क्षेत्र मे पिछले सालों मे भू-जल स्तर में बहुत ज्यादा कमी आई। मूंग, धान, गन्ना और गेहूं की फसल के लिए अधिक पानी की जरूरत होती है। इसीलिए अलसी की फसल पर प्रयोग किए गए। वे बताते है कि गेहूं कि मुकाबले अलसी की फसल मे आधा पानी लगता है। वही अलसी के दाम भी अच्छे मिल जाते है। श्री महोरची बताते है कि फसलों को सबसे ज्यादा नुकसान सूअर, हिरण और गाय उँसे जानवरों से भी होता था। लेकिन अलसी की फसल मे ये दिक्कत नही आती है। अलसी में 40 से 45 प्रतिशत तेल होता है। ऐसे मे खाद्य तेल के आयात में भी कमी आ सकती है। इस समय श्री महेश्वरी 150 एकड़ में अलसी की बैवाबार कर रहे है। वे अन्य किसानों को भी पर्यावरण की सुरक्षा और मुनाफे के लिए अलसी की फसल की सलाह देते है।